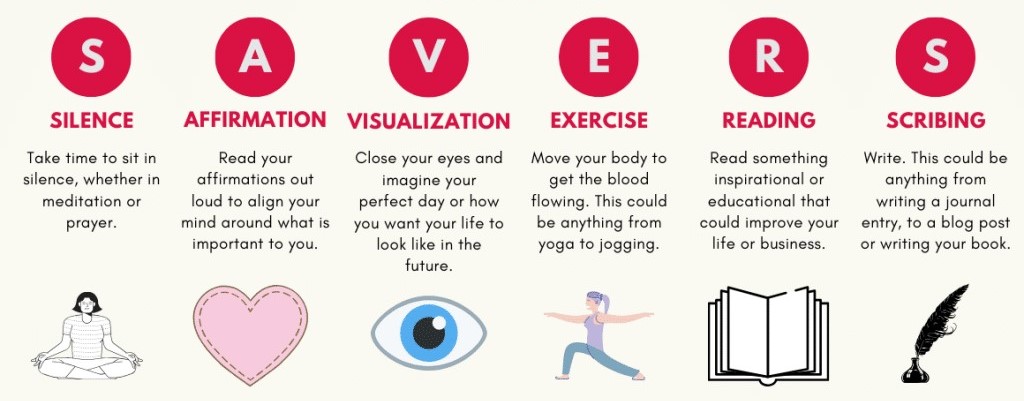
|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| Depot Name | Code | Cash Limit | MRC LIMIT |
| Barisal | 806 | 80 k | 850 |
| Bogra | 802 | 90 k | 800 |
| Brahmanbaria | 816 | 90 k | 800 |
| Chandpur | 815 | 70 k | 800 |
| Comilla | 811 | 80 k | 900 |
| Naogaon | 832 | 70 k | 800 |
| Narshingdi | 831 | 70 k | 850 |
| North Dhaka | 829 | 100k | 950 |
| Patuakhali | 839 | 70 k | 850 |
| Savar | 826 | 80 k | 850 |
| Central | 821 | 100k |  |
| Dinajpur | 828 | 80 k | 800 |
| Faridpur | 825 | 81 k | 800 |
| Feni | 837 | 82 k | 800 |
| Jashore | 804 | 83 k | 800 |
| Khulna | 805 | 84 k | 850 |
| Kushtia | 840 | 70 k | 800 |
| Maijdee | 813 | 71 k | 800 |
| Rangpur | 801 | 90 k | 800 |
| South Dhaka | 809 | 100 k | 950 |
| Chakoria | 814 | 70 k | 950 |
| Chattogram | 812 | 100 k | 900 |
| Moulvibazar | 838 | 70 k | 800 |
| Mymensingh | 807 | 90 k | 800 |
| Narayangonj | 827 | 100 k | 850 |
| Pabna | 836 | 80 k | 800 |
| Rajshahi | 803 | 80 k | 800 |
| Sylhet | 810 | 80 k | 900 |
| Tangail | 835 | 80 k | 850 |

*মিষ্টভাষী, কৌশলী, লেভাসধারী সাথে একটু মিথ্যাবাদী!*



ওঁ ভূর্ভুবঃ স্বঃ  
তৎসবিতুর্বরেণ্যং ।  
ভর্গো দেবস্য ধীমহি  
ধিয়ো য়ো নঃ প্রচোদয়াৎ।।

(ঋগ্বেদ ৩/৬২/১০)

*অর্থাৎ ‘‘যিনি ত্রিলোক স্রষ্টা অর্থাৎ সমগ্র বিশ্ব জগতের প্রসবিতা, সেই সচ্চিদানন্দঘন পরব্রহ্মের বরণীয় জ্যোতিকে আমরা ধ্যান করি। তিনি আমাদের মন ও বুদ্ধিকে শুভ কার্যে প্রেরণা দান করুন।"*

ওঁ ত্র্যম্বকং যজামহে সুগন্ধিং পুষ্টিবর্ধনম্।   
উর্বারুকমিব বন্ধনান্ মৃত্যোর্মুক্ষীয় মাঽমৃতাৎ।।

(ঋগ্বেদ ৭/৫৯/১২)

*অর্থাৎ হে ত্রিনয়ন আমাদের জীবনকে সুগন্ধ ও পুষ্টিতে ভরিয়ে তোল। সকল বন্ধন থেকে মুক্তি দিয়ে আমাদের মৃত্যু হতে অমৃততে নিয়ে যাও।*

যজস্ব তন্বং সুজাত।

(ঋগ্বেদ ১০/৭/৬)

*অর্থাৎ হে পরমেশ্বর! আমাকে বিবিধ জ্ঞান দ্বারা সমৃদ্ধ করো।*

শ্রেয়ান্ স্বধর্মো বিগুণঃ পরধর্মাৎ স্বনুষ্ঠিতাৎ৷   
স্বধর্মে নিধনং শ্রেয়ঃ পরধর্মো ভয়াবহঃ৷৷

(শ্রীমদ্ভগবদগীতা: ৩/৩৫)

*অর্থাৎ নিজ ধর্মের অনুষ্ঠান দোষযুক্ত হলেও উত্তমরূপে অনুষ্ঠিত আপাত দৃশ্যমান পরধর্ম থেকে সর্বশ্রেষ্ঠ। তাই নিজধর্ম সাধনে যদি মৃত্যুও হয়, তবেও   
সে ধর্ম কল্যাণকর ; কিন্তু পক্ষান্তরে পরধর্ম ভয়াবহ।*

অসতো মা সদ্‌গময়,  
তমসো মা জ্যোতির্গময়,  
মৃত্যোর্মামৃতং গময়।৷

(বৃহদারণ্যক উপনিষদ ১।৩।২৮)

*অর্থাৎ অসৎ হতে সৎস্বরৃপে নিয়ে যাও, অন্ধকার হতে আলোয় নিয়ে যাও, মৃত্যু হতে আমাকে অমৃতে নিয়ে যাও।*

সর্বে ভবন্তু সুখিনঃ   
সর্বে সন্তু নিরাময়াঃ।   
সর্বে ভদ্রাণি পশ্যন্ত   
মা কশ্চিদ্ দুঃখভাগ্ ভবেৎ ৷৷

*অর্থাৎ সকলে সুখী হউক, সকলে নিরাময় হউক, সকলের মঙ্গল হউক, কেহ কখন যেন দুঃখ না পায়।*

‘‘আমাকে সেই শক্তি দাও যা বদল করতে পারবো না, তা যেন মেনে নিতে পারি এবং যা বদল করতে পারি তা করার সাহস দাও।’’